आधी आबादी

हर सन्डे, वूमेन्स डे

संस्करण – रविवार, 28 मई 2023, अंक – 03

महिलाओं के फेवरेट हैं माही,

आज आईपीएल फाइनल पर सबकी नज़र

■ हीरेंद्र झा

हाल ही में मैं मुंबई वानखेड़े स्टेडियम में मुंबई इंडियंस और चेन्नई सुपर किंग्स के बीच मैच देखने पहुँचा था। यह मुंबई का होमग्राउन्ड है। स्टेडियम चालीस हज़ार दर्शकों से खचाखच भरा हुआ था। जब मैच शुरू हुआ तो हर तरफ नीली टीशर्ट और मुंबई इंडियंस के झंडे थामे फैंस नज़र आ रहे थे। लेकिन, जैसे-जैसे मैच अपने आखिरी चरण में पहुंचने लगे दर्शक अचानक से पीली टी शर्ट में नज़र आने लगे। होमग्राउंड होते हुए भी यह फैंस चेन्नई को सपोर्ट करने लगे। चेन्नई जीत की तरफ़ बढ़ रहा था और दर्शक हर हाल में माही की बैटिंग देखना चाहते थे, इसलिए रबीन्द्र जडेजा के आउट होने के लिए प्रार्थनाएँ होने लगीं। दर्शक 'वी वॉन्ट धोनी' के नारे लगाते रहे पर उस दिन धोनी के मैदान में उतरने से पहले ही चेन्नई जीत गया। लोग निराश दिखे। यह जादू और करिश्मा है महेंद्र सिंह धोनी का। मैदान में उस दिन भी और उसके बाद भी जब-जब चेन्नई का मैच हुआ हम सबने देखा कि लड़कियों में भी धोनी का ज़बर्दस्त क्रेज़ है। जी हाँ, आधी आबादी के फेवरेट हैं माही। कोई हाथ में पोस्टर लिए उनसे अपने प्यार का इज़हार करती दिखती हैं तो कोई यह तक कहने से नहीं हिचकतीं कि वो सिर्फ़ माही के लिए यह मैच देखने आई हैं। दिल्ली, लखनऊ, बैंगलोर से लेकर गुजरात तक जहाँ-जहाँ मैच हुए मैदान धोनी के चाहने वालों से भरा नज़र आया। इनमें लड़कियों की तादाद भी कम नहीं दिखी। सोशल मीडिया पर भी लड़कियों ने माही के प्रति अपनी दीवानगी का खुलेमन से प्रदर्शन किया। आज धोनी के फैंस पूरे जोश में हैं क्योंकि आज ही आईपीएल का फाइनल मुक़ाबला खेला जाने वाला है। आज धोनी की सेना हार्दिक पाण्ड्या की टीम गुजरात टाइटन्स से मुकाबले के लिए उतरेगी। धोनी चाहेंगे कि आईपीएल 2023 का खिताब जीतकर वो एक बार फिर से अपने चाहने वालों को जश्न मनाने की एक वजह दें। गौरतलब है कि धोनी की टीम इस बार दसवीं बार फाइनल खेल रही हैं। यह अपने आप में एक रिकॉर्ड है। ज़्यादातर लोग यह मान कर चल रहे हैं कि यह धोनी का अंतिम आईपीएल है इसलिए भी सारा देश यही चाहता है कि चेन्नई सुपरकिंग्स ही विजेता हो। ऐसी दीवानगी आईपीएल में किसी और क्रिकेटर के लिए नहीं दिखी है। मुंबई इंडियंस की मालकिन नीता अंबानी कह चुकी हैं कि धोनी को देखकर मैं भी उन्हीं की टीम को सपोर्ट करने लगती हूँ। वाकई धोनी की टीम जीते या हारे धोनी ने सबका दिल ज़रूर जीत लिया है।

अपना ख़्याल रखना!

विशेष संपादकीय

आज देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी भारत के नये संसद भवन का उद्घाटन कर रहे हैं। यह हम सब भारतीयों के लिए एक गर्व का लम्हा है। लेकिन, जिस तरह से विपक्ष इस पूरे मामले का विरोध कर रही है, यह हम सबके समझ से परे है। संसद भवन किसी पार्टी का नहीं बल्कि हम सबका है। जनता के द्वारा चुने गए प्रतिनिधि जहाँ हमारे मुद्दे उठाते हैं। जनहित के कानून बनाते हैं। संसद जिसे लोकतंत्र का मंदिर माना जाता है। उस संसद भवन पर यह कैसी राजनीति है?

हमें यह समझना होगा कि हमारा संसद अँग्रेज़ों ने बनवाया था। आज़ादी के बाद हम वहीं से सरकार चलाने लगे। लेकिन, आज़ादी के अमृत महोत्सव के जश्न मनाते हुए यदि हमने अपने लिए नया संसद भवन तैयार कर लिया है तो यह एक बड़ी उपलब्धि है और हम सभी के लिए यह एक आत्मनिर्भर भारत की एक मिसाल है। इसलिए नये बने संसद भवन पर कोई भी बहस या विरोध तर्कसंगत बात नहीं।

जिस तरह से नये राज्यों का निर्माण हुआ है और देश की आबादी बढ़ रही है, ऐसे में हो सकता है कि मौजूदा सांसदों की संख्या भी बढ़ाई जाएगी। अगर दूर की सोचें तो एक नये संसद भवन की इसलिए भी हमें ज़रूरत पड़ती जहाँ ज्यादा सांसद बैठ सकें। इस दृष्टि से भी नया संसद भवन एक स्वागत योग्य कदम है।

तमाम विवादों के बावजूद आज नये संसद भवन का उद्घाटन होने जा रहा है। आपको बता दें कि तकरीबन 900 से अधिक करोड़ की राशि से तैयार संसद भवन की यह नई इमारत हमारे देश के स्वाभिमान का प्रतीक है और इस बात का जश्न सभी को मनाना चाहिए। आज मोदी प्रधानमंत्री हैं, इसे यूं भी समझ लीजिए कि आज कोई भी प्रधानमंत्री होता तो भी यह खुशी की बात होती कि हमने अपने लिए नया संसद भवन तैयार कर लिया है। हमें याद रखना चाहिए कि यह भाजपा का संसद भवन नहीं है बल्कि भारत का संसद भवन है।

बहरहाल, आधी आबादी संडे को आप सबने जिस तरह से प्यार दिया है यह हमारे लिए भी बड़ी राहत की बात है। यह हमें एक नई जिम्मेदारी का एहसास भी कराती है। मैं अपने नियमित स्तम्भ के जरिए आपसे संवाद करता रहूँगा। आप मुझे सीधे मेल भी कर सकते हैं। हमारा मेल आईडी है- aadhiaabadisunday@gmail.com

– राजेश शर्मा

इंटरव्यू

अभिनेत्री अनुष्का शर्मा इनदिनों कांस फ़िल्म फेस्टिवल में हिस्सा लेने पहुंची हैं। इससे पहले वो अपने क्रिकेटर पति विराट कोहली को आईपीएल में सपोर्ट करती भी नज़र आईं। वर्कफ्रंट की बात करें तो वो जल्द ही इंडियन क्रिकेटर झूलन गोस्वामी पर बनने जा रही फ़िल्म चकदा एक्सप्रेस में दिखेंगी। अनुष्का शर्मा ने बीते सप्ताह आधी आबादी से बातचीत की। प्रस्तुत हैं बातचीत के अंश:

सवाल: आईपीएल में आरसीबी बाहर हो गई है? मायूस होंगी आप?

अनुष्का: खेल में हार जीत लगा रहता है। जो टीम बेहतर खेली वो जीती। अब मायूसी से क्या लाभ? हम सब जीवन में आगे देखते हैं। अब मेरी नज़र भी आगे के कामों पर है।

सवाल: मैच के दौरान कई बार आप इमोशनल नज़र आईं?

अनुष्का: ये नेचुरल है। हम सब इमोशन से भरे हुए लोग हैं। इसमें कुछ गलत तो नहीं।

सवाल: विराट की एक ऐसी क्वालिटी बताइए जो आप चाहेंगी कि आपमें भी हो?

अनुष्का: उनकी मेमोरी काफी शार्प है। जब मैंने विराट को डेट करना शुरू किया था तब भी मैं इस बात से बहुत इंप्रेस हुई थी कि उनकी मेमोरी बहुत अच्छी है। मैं अक्सर चीजें भूल जाती हूँ।

सवाल: आपके दोस्तों को ये शिकायत है कि अब आप पार्टियों में नहीं जातीं? क्या शादी के बाद आप बदल गई हैं?

अनुष्का: ये एक सच्चाई है कि जब आपका बेबी होता है तो आप बहुत अधिक सोशल नहीं हो पाते हैं। हम यूं भी बहुत अधिक सोशलाइज नहीं हैं। हमें नॉर्मल चीजें करना पसंद है और घर पर समय बिताना पसंद है। हमें यूं भी ज्यादा वक्त नहीं मिलता है कि हम एक दूसरे के साथ वक्त बिता सके, तो जब भी हमें समय मिलता है तो हम फैमिली की तरह वक्त बिताना पसंद करते हैं।

सवाल: तो आगे हम आपको बड़े परदे पर कब देखने वाले हैं?

अनुष्का: चकदा एक्सप्रेस के लिए मैं काफी उत्साहित हूँ। इसमें मैं क्रिकेटर झूलन गोस्वामी का किरदार निभा रही हूँ। मुझे उम्मीद है यह फ़िल्म दर्शकों को काफी पसंद आएगी।

हलचल

असम में बहुविवाह पर प्रतिबंध लगाने की तैयारी

असम सरकार ने राज्य में बहुविवाह प्रथा पर प्रतिबंध लगाने लिए एक रिटायर्ड जज की अध्यक्षता में चार सदस्यीय विशेषज्ञ समिति का गठन किया है। यह विशेषज्ञ समिति इस बात का अध्ययन करेगी कि राज्य विधायिका के पास बहुविवाह पर प्रतिबंध लगाने के अधिकार हैं या नहीं। असम सरकार के अनुसार, यह समिति अगले छह महीने के भीतर रिपोर्ट दाखिल करेगी। एनएफएचएस के आंकड़ों के अनुसार, भारत में 1.4 फीसदी महिलाएं बहुविवाह में हैं जिनकी उम्र 15 से 49 साल है। आंकड़ों के मुताबिक बहुविवाह में सबसे ज्यादा महिलाएं उच्च जनजातीय आबादी वाले पूर्वोत्तर राज्य मेघालय (6.2 फीसदी) से हैं, जबकि राज्यों की इस सूची में असम 2.4 फीसदी के साथ छठे स्थान पर है।

मायावती भाजपा के साथ मिल गई है: कांग्रेस

यूपी की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती के नए संसद भवन को लेकर दिए गए बयान पर कांग्रेस ने उन पर निशाना साधा है। कांग्रेस ने कहा कि इससे साफ हो गया है कि बीजेपी और बहुजन समाज पार्टी साथ में आने वाली है। बता दें कि कांग्रेस, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की टीएमसी, सीएम अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी और पूर्व मुख्यमंत्री शरद पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी, द्रविड मुन्नेत्र कड़गम (द्रमुक) और जनता दल (यूनाइटेड) सहित 20 विपक्षी दलों ने नये संसद भवन उद्घाटन कार्यक्रम के बहिष्कार घोषणा की है। इन दलों ने मांग की है कि उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बजाए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को करना चाहिए। लेकिन इन विरोधियों को मायावती का साथ नहीं मिला है। मायावती ने नये संसद भवन के आमंत्रण के लिए मोदी सरकार को धन्यवाद और शुभकामनाएँ भेजी हैं।

सीबीआई के पूर्व निदेशक बने ममता बनर्जी के सुरक्षा सलाहकार

कर्नाटक के पूर्व पुलिस महानिदेशक और सीबीआई के पूर्व विशेष निदेशक रूपक कुमार दत्ता को सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था (सीमावर्ती क्षेत्र सहित) के विषयों पर बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का सलाहकार नियुक्त किया गया है। राजभवन से जारी एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि राज्यपाल सी वी आनंद बोस ने इस नियुक्ति को मंजूरी दे दी है। अधिसूचना के अनुसार 1981 बैच के आईपीएस अधिकारी दत्ता दो साल के लिए इस पद पर रहेंगे। वह फिलहाल बंगाल के गृह विभाग में सलाहकार के तौर पर कार्यरत हैं। ममता बनर्जी सरकार ने पिछले महीने उन्हें पुलिस कल्याण-- पुलिस आवास, स्वास्थ्य, सेवानिवृत्ति लाभ संभालने की जिम्मेदारी दी थी।

अभिनेत्री वैभवी उपाध्याय समेत इन सेलेब्स के निधन से शोक

टीवी इंडस्ट्री में मातम पसरा हुआ है। बीते सप्ताह इंडस्ट्री ने अपनी एक होनहार अभिनेत्री और दो बेहतरीन अभिनेता को खो दिया है। पॉपुलर शो 'साराभाई वर्सेज साराभाई' फेम एक्ट्रेस वैभवी उपाध्याय की मौत से इंडस्ट्री सदमे में है। दरअसल, वैभवी कुछ समय से हिमाचल प्रदेश में थीं। बीते सोमवार को वो अपने मंगेतर जय सुरेश गांधी के साथ घूमने निकली थीं। जानकारी के मुताबिक उनकी गाड़ी ने कंट्रोल खो दिया और 50 फुट गहरे खाई में गिर गई जिससे उनकी मौत हो गई। उनसे पहले एक्टर-मॉडल आदित्य सिंह राजपूत के निधन की ख़बर आई जब वे अपने घर के बाथरूम में संदिग्ध परिस्थितियों में मृत मिले थे। आदित्य महज 32 साल के थे। आदित्य और वैभवी की मौत के गम में टीवी इंडस्ट्री आंसू बहा ही रही थी कि नितेश पांडे की मौत ने एक और झटका दे दिया। 51 साल के नितेश की कार्डियक अरेस्ट से मौत हो गई। नितेश ने शाह रुख खान के साथ ओम शांति ओम में उनके असिटेंट का किरदार निभाया था।

महिला सम्मान सेविंग्स सर्टिफिकेट में 7.5 फीसदी का ब्याज

केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी गुरुवार को अचानक पोस्ट ऑफिस पहुंच गईं। बिल्कुल एक आम नागरिक की तरह। यहां उन्होंने एक खास स्कीम में खाता खुलवाया, जो केवल महिलाओं के लिए है। स्कीम का नाम है महिला सम्मान सेविंग्स सर्टिफिकेट। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने एक फरवरी को पेश हुए बजट में इस स्कीम की घोषणा की थी। महिला सम्मान सेविंग्स सर्टिफिकेट एक वन-टाइम स्मॉल सेविंग स्कीम है। महिलाएं इस स्कीम में अकाउंट खुलवाकर अपनी बचत पर शानदार ब्याज कमा सकती हैं। महिला सम्मान बचत पत्र 2 वर्ष के लिए साल 2025 तक है। इस सेविंग स्कीम में 7.5 फीसदी का ब्याज मिलता है। महिला सम्मान सेविंग्स सर्टिफिकेट में एक महिला या एक गर्ल चाइल्ड के नाम पर कोई भी इन्वेस्टमेंट कर सकता है।

संसद भवन के उद्घाटन पर बेकार की खींचतान

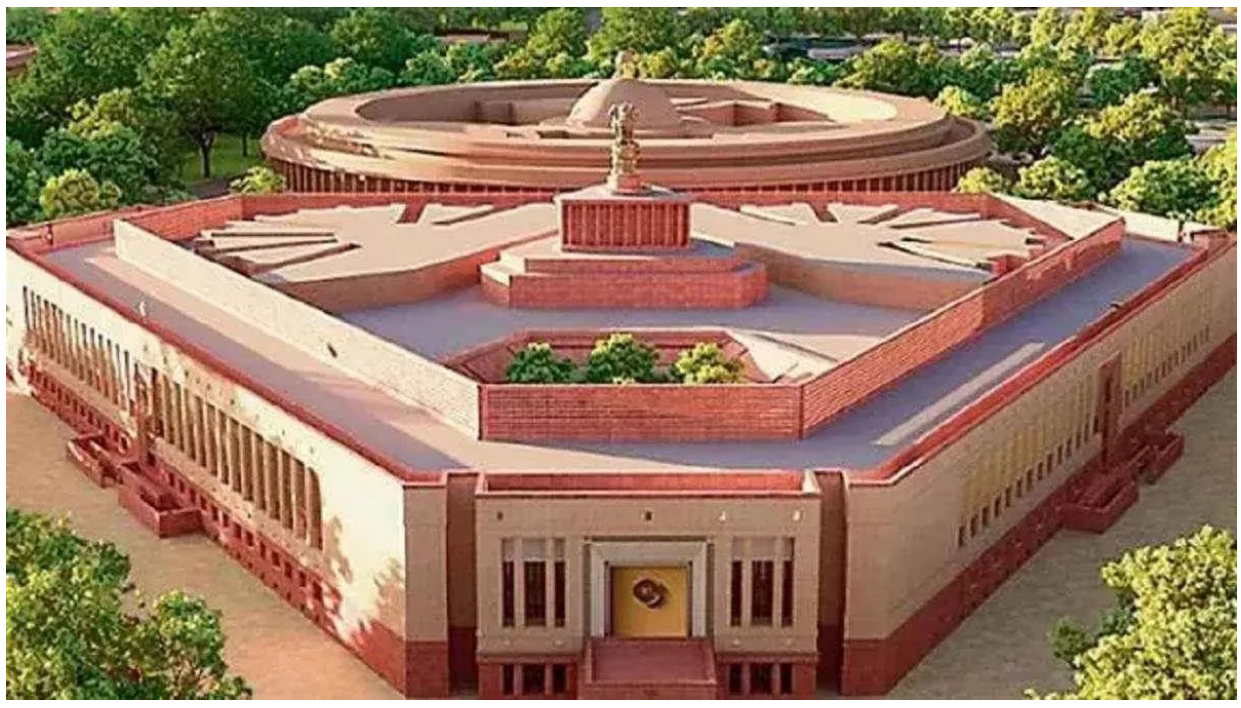

▪ सर्वप्रिया सांगवान

संसद भवन के उद्घाटन को लेकर विपक्ष एक बेकार की खींचतान में पड़ गया है। आइडेंटिटीज़ का दौर चल पड़ा है तो उसी के मुताबिक़ बहस की जा रही है। माननीय राष्ट्रपति एक आदिवासी महिला तो हैं लेकिन उनके संसद भवन का उद्घाटन करने के मायने क्या हैं? वे तो सुप्रीम कोर्ट के फ़ैसले के बाद केंद्र सरकार के पक्ष में रातोंरात अध्यादेश पास कर रही हैं। आम्बेडकर का नाम बड़ा है या उनके आइडियाज़ बड़े हैं? क्या आम्बेडकर के आइडियाज़ को दरकिनार करके, हर जगह सिर्फ़ उनका नाम लगा देना उनके प्रति श्रद्धांजलि है? संसद भवन को दोबारा बनाये जाने की ज़रूरत थी, कहा गया कि इमारत पुरानी हो गई थी। इसलिए 900 करोड़ से ज़्यादा का खर्च किया गया। कोई भी सरकार ये करती तो इसमें किसी को भी श्रेय दिये जाने वाली बात क्या है? पैसा तो जनता का लगा है। बात लोकतंत्र की मज़बूती की होनी चाहिए। संसद सिर्फ़ एक इमारत नहीं है। संसद लोकतंत्र होने का प्रतीक है। संसद सिर्फ़ हाँ में हाँ मिलाने की जगह नहीं, सवाल और इनकार करने की भी जगह है। तो विपक्ष को अपनी माँग पर दोबारा सोचना चाहिए कि किस बात पर अड़ना और लड़ना ज़रूरी है। अगर अड़ना है तो भारत की, संविधान की आत्मा के लिए अड़िये।

स्मार्टफ़ोन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

▪ आधी आबादी डेस्क

सेपियन लैब्स की ताज़ा रिपोर्ट के मुताबिक़, कम उम्र में जब बच्चों को स्मार्टफ़ोन दिए जाते हैं तो युवावस्था आते-आते उनके दिमाग़ पर विपरीत असर दिखने लगता है। ये रिपोर्ट 40 देशों के 2,76,969 युवाओं से बातचीत करके तैयार की गई है और ये सर्वेक्षण इसी साल जनवरी से अप्रैल महीने में किया गया। इन 40 देशों में भारत भी शामिल है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि 74 फ़ीसदी महिलाएँ, जिन्हें 6 साल की उम्र में स्मार्टफ़ोन दिया गया था, उन्हें युवावस्था में मेंटल हेल्थ को लेकर परेशानी आई। एमसीक्यू (मानसिक स्वास्थ्य को लेकर आकलन) में इन महिलाओं का स्तर कम रहा। जिन लड़कियों को 10 साल की उम्र में स्मार्टफ़ोन दिया गया, उनमें 61 फ़ीसदी का एमसीक्यू स्तर कम या ख़राब रहा. कुछ ऐसा ही हाल 15 साल की 61 फ़ीसदी लड़कियों का रहा. दूसरी ओर 18 साल की लड़कियों को जब स्मार्टफ़ोन मिला, तो ये आँकड़ा 48 फ़ीसदी ही रहा. वहीं जब छह साल के लड़कों को स्मार्टफ़ोन दिया गया, तो केवल 42 फ़ीसदी में ही एमसीक्यू के स्तर में कमी देखी गई। सफ़दरजंग अस्पताल में काम कर चुके पूर्व मानसिक रोग विशेषज्ञ डॉक्टर पंकज कुमार वर्मा कहते हैं कि इसका कोई वैज्ञानिक आधार तो नहीं दिखता और इसे पूरी तरह से समझा नहीं जा सका है। उन्होंने बताया कि इसका एक कारण ये हो सकता है कि लड़कों की तुलना में लड़कियों में किशोरावस्था पहले आती है जिसमें मानसिक और शारीरिक बदलाव शामिल हैं। जब लड़कियों का एक्सपोज़र कम उम्र में होता है तो इस अवस्था में आते-आते लड़कों के मुक़ाबले वे ज़्यादा प्रभावित होती हैं। इस शोध ये भी कहा गया है जिन बच्चों को कम उम्र में स्मार्टफ़ोन दिए गए, उनमें आत्महत्या के विचार, दूसरों के प्रति ग़ुस्सा, सच्चाई से दूर रहना और हेलोसिनेशन होना शामिल है।

सर्राफा बाज़ार

22 कैरेट सोना	चांदी
₹55,169	₹70,312
प्रति 10 ग्राम	प्रति किलो

यूपीएससी में बढ़ रहा है बेटियों का वर्चस्व!

▪ निमिषा दीक्षित

“यूपीएससी के टॉप 50 में आधी लड़कियां जबकि टॉप 4 पर रहा लड़कियों का कब्ज़ा!”

गरिमा लोहिया (द्वितीय स्थान)

इशिता किशोर (प्रथम स्थान)

देश की सबसे कठिनतम परीक्षा संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) सीएसई 2022 का रिल्जट पिछले हफ़्ते जारी किया गया। तक़रीबन 5 लाख परीक्षार्थियों में से कुल 933 को इस साल सफलता प्राप्त हुई। दिलचस्प बात ये रही की टॉप 50 की लिस्ट से झलकी असल जेंडर इक्वॉलिटी। सुखद संजोग से टॉप करने वाले 50 बच्चों में लड़के और लड़कियों का अनुपात रहा पूरा आधा-आधा! साथ ही टॉप चार रैंक पर लड़कियों ने बाज़ी मारी। पहली रैंक इशिता किशोर ने, दूसरी गरिमा लोहिया ने और तीसरा स्थान उमा हरति एन ने प्राप्त किया।

हमेशा से ही लोगों की दिलचस्पी इस परीक्षा परिणामों में उतीर्ण हुए टापर्ज़ में रहती है। हर साल ये टापर्ज़ देश के अख़बारों की सुर्ख़ियाँ बटोरते हैं। विगत कुछ वर्षों से टापर्ज़ की लिस्ट में बेटियों का वर्चस्व रहा है। देश की लाड़लियों ने ये साबित किया है कि अगर मौक़ा मिले तो वह कितनी मेहनत कर सकती हैं और किसी भी क्षेत्र में अपना परचम लहरा सकती हैं, चाहे फिर वह देश की सबसे कठिनतम परीक्षा ही क्यों ना हो? देश की प्रशासनिक सेवाओं में चयनित होकर ये लड़कियाँ सिर्फ़ अपने लिए एक बेहतर और उज्ज्वल भविष्य ही नहीं बनातीं। बल्कि इस सफलता के इससे कहीं बड़े मायने हैं। ये लड़कियाँ पूरे समाज के लिए, ख़ासकर महिला समाज के लिए एक मज़बूत नींव खड़ी कर रही हैं।

देश के इन महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत अधिकारी, देश का प्रशासन, पुलिस व्यवस्था, क़ानून व्यवस्था, विकास नीतियों पर, अपराध पर, सज़ा पर, और हर महकमें में ऐसे कई निर्णय लेते हैं जो महत्वपूर्ण होते हैं और जिनका असर पूरे समाज पर पड़ता है। ऐसे पदों पर महिलाओं का प्रतिनिधित्व हमेशा से कम रहा है। नौकरशाही और प्रशासन में महिलाओं का बढ़ता प्रतिनिधित्व, सेवाओं को अधिक उत्तरदायी और जवाबदेह बनाता है, लोक संगठनों के बीच आपसी भरोसा और विश्वास भी बढ़ता है, स्त्री-पुरुष समानता के दृष्टिकोण को पोषण देने का काम करता है और समाज में लड़कियों के प्रति कमजोर पड़ रही सोच को मजबूत करता है।

इस लिहाज़ से इन लड़कियों की ये लगातार सफलता आने वाले भविष्य में एक परिपक्व, संतुलित, शक्तिशाली समाज के निर्माण को सुनिश्चित करती है। आज से 72 साल पहले, वर्ष 1951 में पहली बार भारतीय प्रशासनिक सेवा में महिलाओं को शामिल करने का निर्णय किया गया। उस वर्ष सिर्फ़ एक महिला थी जो सिविल सेवाओं में आई। वो थीं अन्ना राजम जॉर्ज, जिनका नियुक्ति पत्र इस शर्त के साथ आया था कि अगर वो शादी कर लेती हैं तो शादी के बाद उनकी सेवाएँ समाप्त कर दी जाएँगी। हालांकि बाद में नियमों को बदला गया और इस शर्त को वापस ले लिया गया, पर तब से लड़कियों ने एक लम्बा सफ़र तय किया है और सात दशक बाद आज कुल चयनित 933 परीक्षार्थियों में से 613 पुरुष और 320 महिलायें हैं।

उम्मीद है आज की ये लड़कियाँ महिला सशक्तिकरण, पिछड़े तबके के सशक्तिकरण और एक बेहतर समाज की संरचना में एक महत्वपूर्ण योगदान देंग़ी और अपने जैसी बाकी लड़कियों के लिए एक मिसाल बनेंगी। आने वाले साल में जिनसे प्रेरित होकर ज्यादा से ज्यादा लड़कियां यूपीएससी के लिए सोच सकेंगी और अपने सपनों को दे सकेंगी एक ऊंची उड़ान।

रिव्यू - थोड़ा कच्चा थोड़ा पका 'कटहल'

भारतीय ओ.टी.टी. धीरे-धीरे फुल फॉर्म में आता जा रहा है। लंबे समय से इस बात की ज़रूरत महसूस की जा रही थी कि जिन कहानियों में इतनी चमक-दमक नहीं होती कि वे सिनेमाघरों में भीड़ जुटा सकें, उनके लिए कोई तो मंच हो जहां वे बिक सकें, दिख सकें। ओ.टी.टी. इस कमी को दूर करने में सार्थक कोशिशें कर रहा है। ताज़ा मिसाल नेटफ्लिक्स पर आई यह फिल्म 'कटहल' है जो बुंदेलखंड क्षेत्र की एक ऐसी कहानी को पूरी रंगत और रंगीनियत के साथ दिखा रही है जो असल में हमारे यहां के किसी भी राज्य, जिले या शहर की कहानी हो सकती है।

उत्तर प्रदेश के महोबा (फिल्म में मोबा है) के विधायक के घर में लगे पेड़ से 15-15 किलो के दो कटहल चोरी हो गए हैं और पूरे जिले की पुलिस सारे काम छोड़ कर बस इन कटहल को ढूंढने और चोर को पकड़ने में लग गई है। स्टोरी आइडिया अच्छा है। सरकारी तंत्र के काम करने के तौर-तरीकों और ऊंची कुर्सियों पर बैठे ताकतवर लोगों की सोच को उजागर करती है यह फिल्म। ऐसी फिल्में या तो हार्ड-हिटिंग अच्छी लगती हैं ताकि कस कर प्रहार करें या फिर व्यंग्य-हास्य से भरपूर ताकि दर्शक इन्हें देख कर हंसते-हंसते विचार करे। इस फिल्म में लेखक जोड़ी अशोक मिश्रा और यशोवर्धन मिश्रा ने यह दूसरा वाला रास्ता अपनाया है। यही कारण है कि फिल्म की शुरुआत से ही आपके चेहरे पर एक हल्की-सी मुस्कान आ जाती है जो कमोबेश पूरी फिल्म के दौरान बनी रहती है। लेकिन दिक्कत यह है कि यह मुस्कान हंसी-ठहाकों में नहीं बदल पाती और न ही यह फिल्म आपके दिल में गहरे तक उतर पाती है। इसके भी कारण हैं।

दरअसल फिल्म की कहानी है बित्ते भर की, सो इसे फैलाने के लिए लेखकों ने इसमें बहुत कुछ और भी डाला है। लेकिन इस डालने के फेर में इन्होंने कुछ छोड़ा ही नहीं। पुलिस महकमे के दबावों, महिला पुलिसकर्मियों की नौकरी में दशा, अपने काम और घर को बैलैंस करने की उनकी कोशिशों, जाति व्यवस्था, ऊंच-नीच, अमीरी-गरीबी, फटी जींस, लड़कियों के प्रति सोच, पुलिस का भ्रष्टाचार... यानी यूं कहिए कि इस 'कटहल' को पकाने के लिए जो भी ज़रूरी, गैरज़रूरी मसाले लेखकों को मिले, वे सब इसमें डाल दिए गए- बिना यह सोचे कि उन मसालों में से यहां किस की कितनी ज़रूरत है। है भी या नहीं। और अति तो साहब, हर चीज़ की बुरी होती है। लेखकों ने स्क्रिप्ट लिखते समय पुलिस विभाग के बारे में थोड़ा और होमवर्क कर लिया होता तो उन्हें पता होता कि एक कांस्टेबल कितने समय में इंस्पैक्टर बनता है और उसे सीधे सब-इंस्पैक्टर नहीं बनाया जा सकता।

इस कमी के बावजूद फिल्म को खड़ा करने में लेखकों की मेहनत झलकती है। निर्देशक यशोवर्धन मिश्रा ने भी पटकथा को जामा पहनाने में कामयाबी पाई है। रंग-बिरंगे किरदार, उनकी सोच, भाषा, पहनावा, रंग-रूप, हरकतें आदि मिल कर फिल्म को देखने लायक बनाते हैं। कहीं-कहीं संवाद बहुत बेहतर हैं, मार करते हैं। हिन्दी फिल्मों में मीडिया को जिस तरह से जोकरनुमा दिखाया जाता है उसके उलट यहां एक छोटे शहर के लोकल मीडिया नेटवर्क को भी पूरे विश्वसनीय और असरदार तरीके से दिखाया गया है। राजपाल यादव ने पत्रकार अनुज के रोल में बहुत ही प्रभावशाली काम किया है। बुंदेलखंडी भाषा का पूरे लहज़े के साथ किया गया भरपूर इस्तेमाल फिल्म की रंगत में इजाफा करता है। थोड़ा यहां-वहां न भटकती, थोड़ी और कसावट होती, पुलिस वाले किरदारों को रचने में कन्फ्यूज़न न होती और अंत की भगदड़ ज़रा कम होती तो यह फिल्म उम्दा हो सकती थी। गीत-संगीत अच्छा है। लोकेशन वास्तविक हैं और माहौल प्रभावी।

सान्या मल्होत्रा ने दमदार काम किया है। विजय राज़, ब्रिजेंद्र काला, गोविंद पांडेय, नेहा सराफ, गुरपाल सिंह, रघुवीर यादव भी असरदार रहे। नायिका से प्यार करने वाले अनंत विजय जोशी बहुत ही हल्के रहे, किरदार से भी, काम से भी। ऐसी फिल्मों से एक शिकायत यह भी हो सकती है कि जिस इलाके में शूटिंग के लिए जा रहे हैं, वहां के स्थानीय कलाकारों से तो भरपूर काम लीजिए। मध्यप्रदेश में रहने वाले अजय पाल सिंह (नंदू – मिलिए हॉस्पिटल के सामने फू-फू करते नंदू से) जैसे काबिल कलाकार को एक सीन में लेकर क्या दिखाना चाहते हैं फिल्म वाले?

> "हाल ही में आई सान्या मल्होत्रा अभिनीत 'कटहल' फ़िल्म को लेकर चर्चा का बाज़ार गरम है। जाने माने फ़िल्म समीक्षक दीपक दुआ बता रहे हैं कि फ़िल्म में क्या कच्चा रहा तो क्या पक सका है?"
>
> ▪ दीपक दुआ

'मीना मेरे आगे': मीना कुमारी के चाहने वालों के लिए एक अनोखी किताब

▪ गंगा शरण सिंह

मीना कुमारी के जीवन पर केन्द्रित दो किताबें 'इश्क का जहर भरा प्याला' और 'आखिरी अढ़ाई दिन' कई बरस पहले से ही संग्रह में मौजूद हैं पर इनसे पहले मीना जी पर जो किताब पढ़ने का संयोग नियति ने निर्धारित कर रखा था, वह थी– सत्य व्यास की 'मीना मेरे आगे'। कुछ महीने पहले राजकमल के पुस्तक उत्सव में जब सत्य से मुलाकात हुई तो उन्होंने इस किताब के बारे में बताया था और तभी से मैं इसे पढ़ना चाह रहा था। सत्य व्यास की किताबें पहले भी पढ़ता रहा हूँ किन्तु इस किताब के अनुरूप उन्होंने हिन्दी उर्दू के लफ़्ज़ों से बुनी जिस भाषा को रचा है, वह मुझे काबिले तारीफ़ लगी। किस्सागोई में तो वह पहले ही मँज चुके हैं, सो भाषा और कहन दोनों मिलकर इस किताब को एक स्मरणीय स्मृति आख्यान का रूप दे जाते हैं। इस किताब की सबसे अच्छी और उल्लेखनीय बात मुझे यह लगी कि सत्य व्यास किसी किरदार की मोहब्बत में पल भर को भी विचलित नहीं होते और एक तटस्थ सर्जक की तरह पूरी किताब में उन्होंने बैलेंस बनाए रखा।

मुझे यह कहने में कोई गुरेज नहीं है कि मीना कुमारी के चाहने वालों के लिए यह किताब किसी बेहतरीन तोहफ़े से कम नहीं है। 'मीना मेरे आगे' की भूमिका में सत्य व्यास ने जो लिखा है, उसी का एक छोटा– सा सम्पादित अंश पाठक मित्रों के लिए प्रस्तुत है– आप पूछ सकते हैं कि मीना कुमारी पर लिखे जाने की ज़रूरत क्या है, जबकि उन्हें गुज़रे हुए भी आधी सदी होने को आयी। ज़रूरत क्या है उन पर लिखने की जबकि उनके बाद की दुनिया और उनकी अपनी फ़िल्मी दुनिया ने भी सरापा तब्दीलियाँ देख ली हैं। ज़रूरत क्या है मीना की कहानी जानने की, जबकि तब और अब के मुआशरे (समाज) में तमाम रद्दोबदल हो चुके हैं। ऐन यही कारण मीना कुमारी पर लिखे जाने का है। समाज आज जिस बदलाव की ताकीद कर रहा है, जिन बेड़ियों को तोड़कर आगे बढ़ रहा है, मीना ने वह सलासिल, वे बेड़ियाँ आधी सदी से भी ज़्यादा पहले तोड़ दी थीं। इस लिहाज़ से वह एक मायने में पथ प्रदर्शक रही थीं।मीना के बारे में जितनी हकीकत बयान हैं, उतने ही अफसाने भी तैरते हैं। उनको लेकर हर इन्सान की अपनी ही कहानी है और हर कहानी का अपना ही अलग ज़ाविया है। कुछ का मकसद महज़ सनसनी फैलाना था और कुछ ज़ाहिराना सच बयानी थी। कानून का विद्यार्थी कहीं-न-कहीं कानून की भाषा बोलता ही है

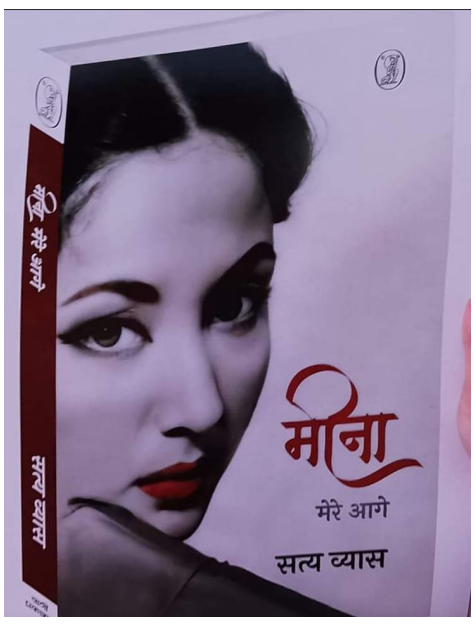

। मीना कुमारी यह दुनिया तब छोड़ गयीं जब मेरे इस दुनिया में आने का कोई इमकान भी आसपास न था। लिहाज़ा उन पर लिखने, उनको जानने और उन तक पहुँचने के लिए मुझे द्वितीयक साक्ष्यों से ही गुज़रना पड़ा। जीवन के कुछ दुखों में से एक दुख यह भी रह ही जायेगा कि काश, उनके वक़्त में पैदा होने की ख़ुशनसीबी अता होती....। काश! इसलिए... यहाँ दर्ज बातों की सच्चाई का दावा करूँ, यह ठीक नहीं होगा और तारीख़ इन बातों को एक सिरे से नकार द, झुठला दे ऐसा भी नहीं। मैं ऐसा कुछ भी नहीं लिख सकता जिसकी बाबत कोई लिखित स्रोत नहीं हो और महज़ सनसनी के लिए ऊलजलूल घटनाओं का समावेश कर लूँ, इसके लिए मेरा मन गवाही नहीं देगा।

लिहाजा, मैं वही लिखूंगा जो कम-ओ-वेश मीना के चाहने वाले जानते हैं। यह प्रयास मीना कुमारी को फिर से याद करने का एक प्रशंसक का प्रयास भर है। प्रयास यह कि आधी सदी पहले हमें छोड़कर चली गयी उस पूर्ण अदाकारा को आधी सदी बाद के पाठक और शैदाई जानें। क्योंकि मूलतः उपन्यासकार हूँ, इसलिए इसमें भी कुछ उपन्यास के तत्त्व आ गये हों तो क्षमा कीजिएगा, यह अनायास हो सकता है।

फिल्म वालों की बदनसीबी यह कि तारीख़ उन पर कभी भी मेहरबान नहीं रही। इस कारण उन पर कोई तारीख़ी किताब नहीं लिखी गयी, न ही उन्हें तारीख़ में दर्ज होने लायक माना गया। फिल्मी अफराद की तारीख़ जो है, वे अख़बार-ओ-रिसालात ही हैं, जिनमें उनकी जिन्दगी के अहम पहलू नुमायाँ होते हैं। सो क्या ज़रूरी कि हम उन बातों, उन अख़बारों, उन मैग़ीनों को सिरे से नकार दें। मसालाई रिसालों की बात दीगर है।

और फिर,

मीना कुमारी का पूरा सच सिर्फ और सिर्फ मीना कुमारी ही जानती थीं। चाहे फिल्मकार, चाहे नातेदार, चाहे कोई किताब या कोई अदीब, कोई भी यह दावा करे कि वह उनकी कहानी मुकम्मल तौर पर जानता है तो यह झूठ होगा। लिहाजा, यहाँ लिखी बातें भी फ़साना मानकर पढ़ा जाना ही सही होगा, क्योंकि इस किताब में लिखी बातें उतनी ही सच्ची हैं जितनी मीना की बाबत फैले किस्से और उतना ही फसाना है जितना मीना की बाबत फैले किस्से ।

बात ख़त्म करता हूँ, वरना उन पर बात करने को ही मुझ पर एक किताब कम है। मैं उनका सम्भवतः आखिरी लम्हे तक शुक्रगुजार रहूँगा। उन्होंने, उनकी ख़ामोश बयानी ने और उनकी फिल्मों ने मुझे, मेरे जीवन में कुछ प्यारे पल दिये।

प्रबंध संपादक: दिनेश के सिंह ❁ संपादक: हीरेन्द्र झा-निमिषा दीक्षित ❁ सलाहकार संपादक: चारुल मल्लिक, राजेश शर्मा, गीता सिंह ❁ डिज़ाइनर: मो. हसमतुल्लाह अंसारी

RNI-DELHIN/2013/51353